श्री नवकार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं ,
णमो सिद्धाणं -
णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं ,
णमो लोए सव्वसाहूणं ।।
एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

मौन एकादशी तप

महत्त्व बारह महीनों में अगहन सुदी ग्यारस का अपना अलग ही महत्त्व है। यह दिन बहुत ही शुभ, श्रेष्ठ व पवित्र माना जाता है, क्योंकि इसी दिन

(१) अठारहवें तीर्थंकर अरनाथ भगवान ने चक्रवर्ती सम्राट का अपार वैभव त्यागकर **दीक्षा** ग्रहण की।

(२) उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ भगवान का **जन्म** कल्याणक, **दीक्षा** कल्याणक एवं **केवलज्ञान** कल्याणक सम्पन्न हुए।

(३) इक्कीसवें तीर्थंकर भगवान नमिनाथ को **केवलज्ञान** भी अगहन सुदी ११ के दिन प्राप्त हुआ। इस प्रकार वर्तमान अवसर्पिणी काल के तीन तीर्थंकरों के (१८वें का एक, १९वें के तीन, २१वें का एक) कुल पाँच कल्याणक इसी (सुदी ११) एकादशी को सम्पन्न हुए।

जम्बु द्विप का एक भरत, एक ऐरावत, घातकी खण्ड के दो भरत, दो ऐरावत अर्द्ध पुष्कर के, दो भरत दो ऐरावत क्षेत्र, ऐसे कुल १० क्षेत्रों के वर्तमान चौवीसी के ५-५ कल्याणकों के गुणाकार से यह संख्या ५० होती है।

अतीत की चौवीसी के ५०, वर्तमान चौवीसी के ५० व आने वाली चौवीसी के ५० को मिलाकर कुल संख्या **१५०** कल्याणकों हो जाती है। अनन्त पुण्यों के पुँज तीर्थंकर भगवान के कल्याणकों से जुड़ी होने से इस एकादशी को लोक कल्याणकारी माना गया है ।

लाभ इसीलिए इस एकादशी के दिन उपवास करके तीनों काल के तीर्थंकरों की आराधना मौन रहकर करने से विशेष उत्तम फल की प्राप्ति होती है। तन, मन व वचन की शुद्धता की प्रतीक इस एकादशी का विशेष महत्त्व है।

उत्तराध्ययन सूत्र में गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से पूछा- 'भंते। **वचन गुप्ति** का क्या अर्थ है और उसका क्या फल है?"

भगवान महावीर ने प्ररूपा- 'गौतम, मन की पाप विकल्प शून्य अवस्था ही मन गुप्ति है। मन में उठने वाली अधर्म विचारों की लहरों अथवा तरंगों का शान्त हो जाना मन गुप्ति है। और मनगुप्ति में सहायक मौन होना वचन गुप्ति है। इस तप के फलस्वरूप जीव में निर्विकारता का भाव आता है।

आचार्य भद्रबाहु के अनुसार- विवेकपूर्वक धर्म वचन प्रयोग करना, विवेक पूर्वक अधर्म वचन का संवरण करना भी अर्द्ध मौन है। पूर्ण मौन, वाणी का सर्वथा निरोध है।

विधि (१) यह तप मृगशिर शुक्ला एकादशी (अगहन सुदी ११) उपवास से प्रारम्भ करें। **(नोट- तालिका में श्रेष्ठ दिवस * चिह्नित किए गए हैं।)**

(२) यह तप प्रत्येक मास के **शुक्ल पक्ष की एकादशी** को निरन्तर ११ वर्ष, ११ माह तक करना चाहिये।

(३) मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी के दिन १०० णमोत्थुणं और १५० कल्याणक की माला जपना आवश्यक है।

(४) ग्यारह लोगस्स का काउसग्ग करना। *(देखें पेज १३)*

(५) ग्यारह बार णमोत्थुणं का पाठ बोलें। *(देखें पेज १३)*

(६) ग्यारह बार गुरु वन्दना करना। *(देखें पेज १२)*

(७) प्रत्येक मास की सुदी ग्यारस (शुक्ल पक्ष) को उपवास करके निम्नानुसार पाँच कल्याणकों की २१-२१ माला गिनना चाहिये।

卐 पाँच कल्याणकों के जप का मंत्र (माला) 卐

१. (ॐ ह्रीं) श्रीं अरनाथ नाथाय नमः।
२. (ॐ ह्रीं) श्रीं मल्लिनाथ अर्हते नमः।
३. (ॐ ह्रीं) श्रीं मल्लिनाथ नाथाय नमः।
४. (ॐ ह्रीं) श्रीं मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः।
५. (ॐ ह्रीं) श्रीं नमिनाथ सर्वज्ञाय नमः।

नियम (१) पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना। (२) पलंग, गद्दी, तकिये आदि का त्याग करना। (३) रात्रि को चौविहार करना। (४) आरम्भ समारम्भ न करना। (५) असत्य भाषण न करना। (६) अश्लील मज़ाक आदि न करना। (७) स्वाध्याय, चिन्तन, मनन में दिन व्यतीत करना। (८) पौषध करना। (९) नवकारसी करने के बाद दान पूर्वक पारणा करना।

विशेष तप की पूर्ति के दिन निम्नलिखित विधि से तप का उद्यापन करें- (१) पाँच पुस्तकें, (२) पाँच आसन, (३) पाँच मुख-वस्त्रिकाएँ, (४) पाँच पूंजनियाँ, (५) पाँच मालाएँ, (६) पाँच दरियाँ, (७) पाँच थाली सेट, (८) पाँच अन्य आयटम। इत्यादिक वस्तुएँ सु-श्रावक या भंडार में चढ़ाएँ। (९) यथाशक्ति सहधर्मियों को भोजन कराएँ।

मौन एकादशी

मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को तीर्थंकरों के डेढ़ सौ कल्याणक की माला गिनना चाहिए

卐 अतीत १ से ५०卐

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

१. श्री महायशः नाथाय नमः
२. श्री सर्वानुभूति अर्हते नमः
३. श्री सर्वानुभूति नाथाय नमः
४. श्री सर्वानुभूति सर्वज्ञाय नमः
५. श्री श्रीधर सर्वज्ञाय नमः

धातकी खंड के पूर्व भरत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

६. श्री अकलंक नाथाय नमः
७. श्री शुभंकर अर्हते नमः
८. श्री शुभंकर नाथाय नमः
९. श्री शुभंकर सर्वज्ञाय नमः
१०. श्री सप्तनाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पूर्व भरत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

११. श्री सुमरनाथनाथाय नमः
१२. श्री व्यक्तनाथ अर्हते नमः
१३. श्री व्यक्तनाथ नाथाय नमः
१४. श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नमः
१५. श्री कलाशत सर्वज्ञाय नमः

धातकी खंड के पश्चिम भरत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

१६. श्री सर्वार्थ नाथाय नमः
१७. श्री हरिभद्र अर्हते नमः
१८. श्री हरिभद्र नाथाय नमः
१९. श्री हरिभद्र सर्वज्ञाय नमः
२०. श्री मगधाधिप सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पश्चिम भरत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

२१. श्री प्रलम्बनाथाय नमः
२२. श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः
२३. श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः
२४. श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः
२५. श्री प्रशमराजीव सर्वज्ञाय नमः

जम्बू द्वीप के ऐरावत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

२६. श्री दयान्त नाथाय नमः
२७. श्री अभिनन्दन नाथ अर्हते नमः
२८. श्री अभिनन्दन नाथ नाथाय नमः
२९. श्री अभिनन्दन नाथ सर्वज्ञाय नमः
३०. श्री रत्नेशसर्वज्ञाय नमः

धातकी खंड के पूर्व ऐरावत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

३१. श्री सौंदर्य नाथ नाथाय नमः
३२. श्री त्रिविक्रम नाथ अर्हते नमः
३३. श्री त्रिविक्रम नाथ नाथाय नमः
३४. श्री त्रिविक्रम नाथ सर्वज्ञाय नमः
३५. श्री नरसिंह नाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पूर्व ऐरावत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

३६. श्री अष्टादिक नाथाय नमः
३७. श्री वणिकनाथ अर्हते नमः
३८. श्री वणिकनाथ नाथाय नमः
३९. श्री वणिकनाथ सर्वज्ञाय नमः
४०. श्री उदयज्ञान सर्वज्ञाय नमः

धातकी खंड के पश्चिम ऐरावत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

४१. श्री परुष नाथाय नमः
४२. श्री अवबोध अर्हते नमः
४३. श्री अवबोध नाथाय नमः
४४. श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः
४५. श्री विक्रमेन्द्र सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पश्चिम ऐरावत क्षेत्र की अतीत चौबीसी के ५

४६. श्री अश्ववृन्द नाथ नाथाय नमः
४७. श्री कुटीलक नाथ अर्हते नमः
४८. श्री कुटीलक नाथ नाथाय नमः
४९. श्री कुटीलक नाथ सर्वज्ञाय नमः
५०. श्री वर्धमान नाथ सर्वज्ञाय नमः

卐 वर्तमान ५१ से १०० 卐

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

५१. श्री नमिनाथ नाथाय नमः
५२. श्री मल्लिनाथ अर्हते नमः
५३. श्री मल्लिनाथ नाथाय नमः
५४. श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः
५५. श्री अरनाथ सर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पूर्व भरत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

५६. श्री ब्रह्मेन्द्र नाथ नाथाय नमः
५७. श्री गुणनाथ अर्हते नमः
५८. श्री गुणनाथ नाथाय नमः
५९. श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः
६०. श्री गांगीकनाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पूर्व भरत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

६१. श्री अरण्यवासनाथाय नमः
६२. श्री योगनाथ अर्हते नमः
६३. श्री योगनाथ नाथाय नमः
६४. श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः
६५. श्री अयोगनाथसर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पश्चिम भरत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

६६. श्री प्रयच्छ नाथाय नमः
६७. श्री अक्षोभनाथ अर्हते नमः
६८. श्री अक्षोभनाथ नाथाय नमः
६९. श्री अक्षोभनाथ सर्वज्ञाय नमः
७०. श्री मलयासह सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पश्चिम भरत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

७१. श्री स्वामी नाथाय नमः
७२. श्री विपरीत नाथ अर्हते नमः
७३. श्री विपरीत नाथ नाथाय नमः
७४. श्री विपरीत नाथ सर्वज्ञाय नमः
७५. श्री प्रसिद्धनाथ सर्वज्ञाय नमः

जम्बू द्वीप के ऐरावत्क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

७६. श्री श्याम कोष्ट नाथाय नमः
७७. श्री मरुदेवनाथ अर्हते नमः
७८. श्री मरुदेवनाथ नाथाय नमः
७९. श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नमः
८०. श्री अति पार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पूर्व एरावत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

८१. श्री क्षेमित नाथाय नमः
८२. श्री संतोषित नाथ अर्हते नमः
८३. श्री संतोषित नाथ सर्वज्ञाय नमः
८४. श्री संतोषित नाथ सर्वज्ञाय नमः
८५. श्री कामनाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पूर्व ऐरावत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

८६. श्री तमोकंद नाथाय नमः
८७. श्री सायकाक्ष अर्हते नमः
८८. श्री सायकाक्ष नाथाय नमः
८९. श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः
९०. श्री क्षेमितनाथ सर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पश्चिम ऐरावत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

९१. श्री सुशान्ति नाथ नाथाय नमः
९२. श्री हरदेव अर्हते नमः
९३. श्री हरदेव नाथाय नमः
९४. श्री हरदेव सर्वज्ञाय नमः
९५. श्री नंदिकेशनाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पश्चिम ऐरावत क्षेत्र की वर्तमान चौबीसी के ५

९६. श्री नन्दिकेश नाथाय नमः
९७. श्री धर्मचन्द्र नाथ अर्हते नमः
९८. श्री धर्मचन्द्र नाथ नाथाय नमः
९९. श्री धर्मचन्द्र नाथ सर्वज्ञाय नमः
१००. श्री विवेक नाथ सर्वज्ञाय नमः

卐 अनागत १०१ से १५० 卐

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र की अनागत चौबीसी ५

१०१. श्री स्वयंप्रभ नाथाय नमः
१०२. श्री देवश्रुत अर्हते नमः
१०३. श्री देवश्रुत नाथाय नमः
१०४. श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः
१०५. श्री उदयनाथ सर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड भरत क्षेत्र की अनागत चौबीसी ५

१०६. श्री सांप्रतनाथाय नमः
१०७. श्री मुनिनाथ अर्हते नमः
१०८. श्री मुनिनाथ नाथाय नमः
१०९. श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः
११०. श्री विशिष्टनाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप कीपूर्व भरत क्षेत्र के अनागत चौबीसी के ५

१११. श्री परमनाथनाथायनमः
११२. श्री शुद्धार्थीनाथ अर्हते नमः
११३. श्री शुद्धार्थीनाथ नाथाय नमः
११४. श्री शुद्धार्थीनाथ सर्वज्ञाय नमः
११५. श्री श्रीनिकेश नाथसर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पश्चिम भरत क्षेत्र की अनागत चौबीसी के ५

११६. श्री दिनरूकू नाथाय नमः
११७. श्री धनदनाथ अर्हते नमः
११८. श्री धनदनाथ नाथाय नमः
११९. श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नमः
१२०. श्री पोषधनाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप की पश्चिम भरत क्षेत्र के अनागत चौबीसी के ५

१२१. श्री अघटित नाथाय नमः
१२२. श्री भ्रमेंद्र अर्हते नमः
१२३. श्री भ्रमेंद्र नाथाय नमः
१२४. श्री भ्रमेंद्र सर्वज्ञाय नमः
१२५. श्री ऋषभचन्द्र सर्वज्ञाय नमः

जम्बू द्वीप के ऐरावत क्षेत्र की अनागत चौबीसी के ५

१२६. श्री नंदिषेणनाथायनमः
१२७. श्री व्रतधर अर्हते नमः
१२८. श्री व्रतधर नाथाय नमः
१२९. श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नमः
१३०. श्री निर्वाण नाथसर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पूर्व ऐरावत क्षेत्र की अनागत चौबीसी के ५

१३१. श्री मुनिनाथनाथायनमः
१३२. श्री चन्द्रनाथ अर्हते नमः
१३३. श्री चन्द्रनाथ नाथाय नमः
१३४. श्री चन्द्रनाथ सर्वज्ञाय नमः
१३५. श्री दिवादित्यसर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के ऐरावत क्षेत्र की अनागत चौबीसी के ५

१३६. श्री निर्वाणिक नाथ नाथाय नमः
१३७. श्री रविराज अर्हते नमः
१३८. श्री रविराज नाथाय नमः
१३९. श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः
१४०. श्री प्रथमनाथ सर्वज्ञाय नमः

धातकी खण्ड के पश्चिम ऐरावत क्षेत्र की अनागत चौबीसी के ५

१४१. श्री महामृगेन्द्र नाथ नाथाय नमः
१४२. श्री अशोचित नाथ अर्हते नमः
१४३. श्री अशोचित नाथ नाथाय नमः
१४४. श्री अशोचित नाथ सर्वज्ञाय नमः
१४५. श्री धमेन्द्र नाथ सर्वज्ञाय नमः

अर्द्ध पुष्कर द्वीप के पश्चिम ऐरावत क्षेत्र की अनागत चौबीसी के ५

१४६. श्री कलापक नाथ नाथाय नमः
१४७. श्री विसोम नाथ अर्हते नमः
१४८. श्री विसोम नाथ नाथाय नमः
१४९. श्री विसोम नाथ सर्वज्ञाय नमः
१५०. श्री अख्य नाथ सर्वज्ञाय नमः

नोट : कुछ आचार्यों का मानना है कि अनागत के तीर्थंकरों के ५० कल्याणक की माला नहीं गिनना चाहिये क्योंकि, वे वर्तमान में किस योनि में हैं, यह ज्ञात नहीं है। **तत्त्वं केवली गम्यं।**

मौन एकादशी कथा (सुरचन्द : सुव्रत)

धातकीखण्ड में 'विजय पाटन' नाम का एक नगर था। वहाँ नववर्मा नाम का राजा राज्य करता था। वह राजा, प्रजा से विशिष्ट सम्मानित था। उसकी चन्द्रावती नाम की रानी थी। उसी नगर में एक **'सरचंद'** नामक श्रेष्ठी था। वह सभी व्यापारियों में अग्रणी था और धर्म पर भी अपार श्रद्धा वनिष्ठा रखने वाला धर्मिष्ठ था। उसके सुरमति नाम की सुशीला एवं मधुरभाषिणी नारी थी।

एक समय रात्रि को सेठ अपने शयनागार में सुखपूर्वक सोया हुआ था। अर्द्ध-रात्रि के समय जब उसकी नींद खुली, तो वह सोचने लगा– "मैंने पूर्व-भव में बहुत सुकृत कार्य किये होंगे, जिसके परिणामस्वरूप आज मैं सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ, परन्तु आगामी भव के लिये मैंने अभी तक कुछ भी नहीं किया। इसलिए मुझे श्रेष्ठ कार्य अवश्य करना चाहिए, क्योंकि उसके बिना भविष्य अंधकारमय कंटकाकीर्ण है।"

इस प्रकार के शुभ अध्यवसायों और चिन्तन में अर्ध रात्रि व्यतीत की। प्रात:काल जब वह सुख-शय्या से उठा, तो विचार किया – "मुझे गुरुदेव के दर्शनार्थ अवश्य जाना चाहिए।" स्नानादि से निवृत्त होकर वह श्री **विजयसेन** जी महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ। वन्दना-नमस्कार कर वह मुनिराज के समक्ष बैठ गया। ध्यानादि क्रिया के पश्चात् गुरुदेव ने **देशना** प्रारम्भ की –

आलस मोहा वन्ना, थंभा कोहा पमाय किविणत्ता।
भय सोगा अन्नाणा, विगहा, कुउहला रमणा।।

अर्थात् (१) आलस, (२) मोह, (३) प्रशंसा, (४) अहंकार, (५) क्रोध, (६) प्रमाद, (७) कृपणता, (८) भय, (९) शोक, (१०) अज्ञान, (११) विकथा, (१२) कौतूहल और (१३) रति इन तेरह अन्तरायों का त्याग करना चाहिए। धर्म में विघ्न डालने वाले इन कारणों से जीव उत्कृष्ट अप्रतिष्ठान नरक में जाता है।

पणकोडि अडसट्ठि, लक्खा नव नवइ सहस्स पंचसया।
चुलसि अहीय नरए, अपइट्ठाणंमि वाहीओ।।

अर्थात् पाँच करोड़ अड़सठ लाख निन्यानवे हजार पाँच सौ चौरासी प्रकार की व्याधियों सहित वह **अप्रतिष्ठान** नामक सातवीं नरक का केन्द्रवर्ती आवास हैं। अतः हे श्रेष्ठी ! इन नरक के दुःखों का नाश करने वाले धर्म की आराधना अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि धर्म की महिमा अद्भुत है–

भरहे य केइ जीवा, मिच्छादिट्ठी य भद्दया भावा।
ते मरिउण नवमे, वरिसमि हुंति केवलिणो।।

अर्थात् इस भरत क्षेत्र में भी बहुत से ऐसे मिथ्यादृष्टि भद्र प्रकृति वाले जीव हैं, जो यहाँ से मरकर (कर्मभूमि क्षेत्र में) नवमें वर्ष में केवली होंगे। हे श्रेष्ठी! सुलभबोधि जीव को कुछ भी दुर्लभ नहीं।

इस प्रकार गुरुदेव की अमृत वाणी सुनकर सेठ बहुत प्रसन्न हुआ और वन्दना-नमस्कार कर बोला – "हे गुरुदेव ! मैं दिन-रात गृह कार्य में व्यस्त रहने वाला मानव हूँ। मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि मैं सदैव व्रत या उपवास कर सकूँ। अतः कृपा करके मुझे कोई ऐसा दिन बतलाइये कि उस दिन मैं धर्माराधन करके अत्यधिक पुण्योपार्जन कर सकूँ।" तब गुरुदेव ने मधुर शब्दों में **देशना** दी – "**मृगशिर शुक्ला एकादशी**" के दिन उपवासपूर्वक अष्ट प्रहर का पौषध व्रत करके मौन सहित धर्माराधना करनी चाहिए।

卐 मौन का महत्त्व, लाभ 卐

सक्तुमिव तितउना पुनंतो, यत्र धीरा मनसा वाचमक्रमतः।
अत्र सखायः सख्यानि जानते, भद्रेषां लक्ष्मी निहिताधि वाचिः।।

अर्थात् जिस समाज में धीर पुरुष जैसे – सूप से धान को छानते हैं और उनमें से शुद्ध अंश ही ग्रहण करते हैं, वैसे ध्यानपूर्वक, मननपूर्वक वाणी को छानकर बोलते हैं, वहाँ लक्ष्मी का निवास होता है। सौभाग्य, श्री, कांति, ऐश्वर्यादि का सृजन होता है। किन्तु पैसे को अनुचित प्रोत्साहन देने वाला मनुष्य कभी भी आध्यात्मिक धर्म विकास नहीं कर सकता है, क्योंकि पैसा तो कृत्रिम है, चंचल है, नाशवान है। वह न किसी का बना है और न बनेगा ही। लेकिन मनुष्य भूल से उसे अपना समझ बैठा है। पैसे को सर्वस्व मानने वाला सदा भययुक्त, भ्रांतियुक्त एवं अशांत रहता है। पर यह मानव समाज की दयनीय स्थिति है।

उस शांति-प्राप्ति हेतु मौन परमावश्यक है। क्योंकि मौन, आरंभ विषय कषायों को रोकने का महान् साधन है, आत्म-समाधि का गुप्त मंत्र है। अशुभ व्यवहार, अशुभ व्यापार तथा सावद्य भाषा में मौन नहीं रखना, वह वचन का दुर्व्यय है। मौन रहने वालों की आत्मा जैसी निर्मल, पवित्र और पावन रहती है, वैसी बोलने वालों की नहीं। जिस स्थान पर क्लेश होने की संभावना हो, वहाँ मौन ही रखना चाहिए, क्योंकि क्लेश को नष्ट करने तथा शांति का साम्राज्य स्थापित करने का एक मात्र साधन मौन है।

''मौनं अपंडितानां अपि वर भूषणं।''

अर्थात् मौन रहने से मन की चंचलता कम होती है, अनर्थ दण्ड से आत्मा बच जाती है। मौन पंडितों तथा अपंडितों के लिए भी श्रेष्ठ भूषण है।

वैसे तो तप तीन प्रकार का है – **१.** मन का तप, **२.** वचन का तप और **३.** काया का तप। उसमें वचन का तप मौन है।

मन्यते यो जगत्तत्त्वं, स मुनिः परिकीर्तितः।
सम्यक्त्वेन च तन्मौनं, मौनं सम्यक्त्वमेव च।।

अर्थात् भगवान का कहा हुआ धर्म, मुनि लोग जानते हैं। उसका सार मौन है। मौन ही सम्यक्त्व है तथा सम्यक्त्व ही मौन है। मौन, ध्यान का महान् साधन है और आत्म-साधना की सिद्धि, ध्यान का विषय है। चित्त की शान्ति के बिना ध्यान की सफलता नहीं है। चित्त की शान्ति मौन से ही रहती है, अतः इसे आध्यात्मिकता की भूमि कहा है।

पापमय व्यापारों को रोकना इसका उद्देश्य है। मौन से शरीर शक्ति कम खर्च होती है, श्वासोच्छ्वास कम खर्च होते हैं, फेफड़े मजबूत बनते हैं और मन प्रभु-स्मरण में लगा रहता है। मौन के दिन व्यापारादि कार्य स्थगित कर देने चाहिए।

इस प्रकार **'एकादशी तप'** की महिमा सुनकर सेठ अति प्रसन्न हुआ और भक्तिभाव पूर्वक वन्दना-नमस्कार करके उसने एकादशी तप की अराधना अंगीकार की। सम्पूर्ण परिवार सहित उसने सम्यक् प्रकार से एकादशी तप की आराधना की।

卐 जाति स्मरण देव : सुव्रत सेठ 卐

पन्द्रह दिनों पश्चात् सेठ के उदर में अकस्मात् शूल की पीड़ा उत्पन्न हुई। उस असह्य वेदना को समभाव से सहन करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुआ। मरकर ग्यारहवें आरण देवलोक में उत्पन्न हुआ। इक्कीस सागरोपम की स्थिति प्राप्त की।

वहाँ से च्यवकर इसी जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र के सौरीपुर नगर के सेठ **समुद्रदत्त** के यहाँ प्रीतिमती सेठानी की कुक्षि से पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। जब यह गर्भावस्था में था, तो माता को यह दोहद उत्पन्न हुआ कि "मैं श्रावक के बारह व्रत धारण करूँ। सन्त एवं सतियों को दान दूँ। सम्यक्त्वी और सहधर्मी की हर प्रकार से सेवा करूँ।" दु:खी प्राणियों के दु:ख दूर करूँ। समुद्रदत्त सेठ के समक्ष जब उसने अपनी मनोकामना व्यक्त की, तो सेठ ने सेठानी की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण की।

जन्म समय पुत्र की नाल जहाँ काटकर गाड़ी वहाँ अपार धनराशि प्राप्त हुई। व्रत दोहद से उसका नाम **सुव्रत** कुमार रखा। शनै:-शनै: विद्याध्ययन में प्रविष्ट होकर वह बहोत्तर कलाओं में निपुण बना। युवावस्था में पदार्पण करने पर ग्यारह सुयोग्य कन्याओं के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। कुछ समय पश्चात् पुत्र को सुयोग्य सुसंस्कारी मानकर गृह कार्य का समस्त भार सौंपकर सेठ ने दीक्षा धारण की। सुव्रत सेठ ग्यारह करोड़ स्वर्ण-मुद्राओं का स्वामि बना।

वहाँ एक समय पाँच महाव्रत की पच्चीस भावना का अन्त:करण से पालन करने वाले सत्ताईस गुणों से युक्त, संसारी प्राणियों को अज्ञान अंधकार में से निकालने वाले, कामदेव पर विजय पाने वाले, पाँच समिति, तीन गुप्ति युक्त क्षमादि दस धर्मों को पालने वाले, तीन प्रकार के शल्यों से रहित, सर्वथा ममतारहित, आठों मद के त्यागी, बारह प्रकार का तप करने वाले, मेरु सम धीर, सागर सम गम्भीर, शशि सम उज्ज्वल हृदय वाले, भारण्ड पक्षी समान अप्रमत्त विचरने वाले **'धर्मघोष'** नाम के आचार्यश्री पधारे।

सुव्रत सेठ भी आचार्यश्री के पधारने के शुभ संवाद को श्रवण कर स्वयं को कृत-कृत्य करने के लिए आचार्यश्री की उपासना में उपस्थित हुए और सविधि वन्दना की।

गुरुदेव ने भव्य जीवों के चित्त को आकर्षित करने वाली, अशुभ कर्मों के समूह को नष्ट करने वाली, विषय कषाय को क्षय करने वाली, महादु:खों से त्रस्त प्राणियों को सुख का मार्ग बताने वाली, संसाररूपी समुद्र से नाव की भाँति पार करने वाली, वैराग्य उत्पन्न करने वाली उत्तम **धर्मदेशना** दी।

सुव्रत श्रेष्ठी ने जब मधुर, आत्म-हितकारिणी गुरु-वाणी सुनी, तो उसका मन मयूर प्रसन्नता से नाच उठा। उस अमृतमय वाणी के प्रवाह में वह इतना बहा एवं इतना तन्मय बना कि शुभ परिणाम स्वरूप **जाति-स्मरण** ज्ञान उत्पन्न हुआ।

तब गुरुदेव ने प्रश्न किया – "सेठजी ! कुछ उपलब्ध हुआ ?"

सेठ ने कहा – "हाँ भगवन् ! आपकी कृपा से कुछ प्राप्त हुआ। पहले भव में मैंने मौन एकादशी के व्रत का पूर्णरूपेण पालन किया था, उसके प्रभाव से मैं **ग्यारहवें स्वर्ग** में गया। वहाँ से चवकर मैं श्रेष्ठी-कुल में जन्मा और ग्यारह करोड़ स्वर्ण-मुद्राओं का स्वामी बना हूँ। भगवन् ! अब मैं कौन-सा ऐसा सुकृत कार्य करूँ, जिससे कि मैं उत्तरोत्तर विकास की ओर बढ़ता हुआ चला जाऊँ।"

गुरुदेव ने कहा – जिस पथ पर चलने से तुम्हें अपूर्व सुख प्राप्त हुआ, उसी मार्ग की ओर चरण बढ़ाओ, क्योंकि कहा है –

विधिना मार्गशीर्षस्यैकादश्यां धर्ममाचरेत्।
यदैकादशभिवर्षैरचिरात् स शिवं भजेत्।।

अर्थात् जो आत्मा मृगशिर (अगहन) मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को प्रारंभ करके विधि सहित ग्यारह वर्ष ग्यारह महीने तक तपाचरण करता है, वह अल्पकाल में मोक्ष प्राप्त करता है। इस एकादशी को **मौन** सहित **चौविहार उपवास** करके प्रतिपूर्ण पौषध व्रत करना चाहिए।

प्रश्न – "मृगशिर मास इतना श्रेष्ठ क्यों माना गया है।"

उत्तर – "मासानां मार्गशीर्षोऽस्तु ऋतुनां कुसुमाकरः।।"

बारह मास में मृगशिर महीना इसलिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है कि इससे शीत ऋतु का आगमन होता है। सर्वत्र शीतलता का संचार होता है। ऋतुओं में वसन्त ऋतु के सदृश यह मास, मास्त्रों में महान् है, श्रेष्ठ है एवं इसी दिन तीन तीर्थंकरों के जन्म, मोक्ष, केवल्यज्ञान यों पाँच कल्याणक हुए।

गुरुदेव के श्रीमुख से पुन: **'मौन एकादशी'** के तप पालन का आदेश होने पर हर्षित होकर परिवार सहित मौन एकादशी व्रत करने का प्रतिज्ञा की।

卐 अनुष्ठान प्रभाव धनरक्षा 卐

एक समय मृगशिर मास की शुक्ला एकादशी के दिन सुव्रत सेठ ने परिवार सहित आठ प्रहर का प्रतिपूर्ण-पौषध उपाश्रय में किया हुआ था। इधर चोरों को ज्ञात हुआ कि सेठ समस्त परिवार सहित पौषधशाला में है, घर में कोई भी नहीं है। अत: ऐसा अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। ऐसा सोच चोर सेठ के घर पर पहुँच गये। उस समय सेठजी अपने घर के पास ही उपाश्रय में लोगस्स का ध्यान किये हुए खड़े थे। चोर धन की गठरियाँ बाँधकर सिर पर रखकर जाने लगे। ज्यों ही सेठजी का ध्यान पूर्ण हुआ, तो उन्होंने चोरों को धन की गठरियाँ ले जाते हुए देखा।

सेठ ने मन ही मन विचार किया कि ये जो धन जा रहा है, वह मेरा नहीं है, मेरा धन तो मेरे पास है। इसका कोई हरण नहीं कर सकता, कोई बाँट नहीं सकता। वह शाश्वत है, स्वाधीन है, अविच्छिन्न है, समता-शान्ति को देने वाला है। इस बाह्य धन से मेरी आभ्यन्तर सम्पत्ति का कोई सम्बन्ध नहीं है। पर दुनिया आक्षेप करेगी कि 'धर्म करते धाड़ पड़ी।' अत: धर्म पर कोई आक्षेप नहीं आये, यही जिनेश्वरदेव से प्रार्थना है। ज्यों ही सेठ के मन में यह विचार आया, त्यों ही इन्द्र का आसन काँप उठा। उसने अवधिज्ञान से सर्व वृत्तान्त देखा, फिर सोचा – "सहधर्मी की व धर्म की रक्षा करना-कराना मेरा परम कर्त्तव्य है।"

अत: लोकपाल को बुलाकर कहा – "जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र के सौरीपुर नगर में जाओ। सुव्रत सेठ अपने परिवार सहित मौनावलम्बी हो, प्रतिपूर्ण पौषध व्रत किये हुए अपनी पौषधशाला में है।

चोर उसके घर से धन हरण कर ले जाने की तैयारी में है, तुम शीघ्र जाकर उसके धन का घर का संरक्षण करो।'' इन्द्र का आदेश होते ही लोकपाल ने शीघ्र आकर चोरों के पाँव चिपका दिये।

शीघ्र ही सारे शहर में ये समाचार फैल गये। जब वहाँ के राजा ने भी यह सुना, तो वे स्वयं वहाँ उपस्थित हुए। लेकिन चोरों को चित्रवत् खड़े देखकर राजा के आश्चर्य की सीमा न रही। शनैः-शनैः जब राजा को सम्पूर्ण रहस्य ज्ञात हुआ, तो सपरिवार एवं मंत्री सहित उन्होंने भी जिन-धर्म अंगीकार किया और महाराजा ने चोरों को बन्धन में डाला।

सेठ ने आठ प्रहर का पौषध व्रत पूर्ण होने पर सोचा – ''इन चोरों का आर्त्तध्यान आदि में जीवन बिगड़ जायेगा, इसलिए मैं पहले जाकर इन्हें बन्धन से मुक्त करवाऊँ, उसके पश्चात् पारणा करूँगा।'' वह सेठ बहुमूल्य रत्न लेकर राजा के पास गया। रत्न भेंट करते हुए विनय सहित नमस्कार करके बोला – ''महाराज! ये चोर मेरे उपकारी हैं। इनके द्वारा ही मेरी परीक्षा हुई कि मैं धर्म-साधना में कितना दृढ़ हूँ? परीक्षक का उपकार कैसे भुलाया जा सकता है ? अतः ये मेरे बहुत उपकारी हैं, इसलिए हे राजन् ! आप इन्हें बन्धन से मुक्त करिये।''

सेठ की इस उदात्त एवं उदार भावना को देखकर राजा अतीव प्रसन्न हुये। चोरों को बोध देते हुए राजा ने कहा – ''तुम्हें बन्धन से मुक्त करने में सेठ की उदारता व दया भावना ही कारण है। तुम्हें इनका उपकार कभी नहीं भूलना चाहिए।''

सेठ की दया व अनुकम्पा से चोर बहुत प्रभावित हुए और सेठ के श्रीचरणों में नत-मस्तक होकर प्रतिज्ञा की कि ''आज से हम कभी भी चोरी नहीं करेंगे, हम समस्त व्यसनों का जिनेन्द्रदेव की साक्षी से त्याग करते हैं। आपने हमें इन बन्धनों से ही नहीं, बल्कि दुराचार के बन्धनों से भी मुक्त किया है। आपका उपकार हम कभी नहीं भूल सकते।'' इस प्रकार की क्रिया से राजा, प्रजादि अति प्रभावित हुए और सेठ को सम्मानपूर्वक उनके घर पहुँचाया।

अग्नि कांड में सुरक्षा

कुछ समय पश्चात् फिर सुव्रत सेठ व समस्त परिवार ने **"मौन एकादशी तप"** किया हुआ था। रात्रि को सारे शहर में **आग** लग गई। आसपास के सभी घर जलकर भस्म हो गये। नगर में कोलाहल मच गया। जब आग बुझाने के सभी प्रयत्न विफल हुए, तो जिसको जिधर सुरक्षा का मार्ग मिला, उधर ही भागने लगे।

कुछ शुभ-चिन्तक सज्जन पौषधशाला में सेठ के पास आकर बोले – "सेठजी ! अग्नि बड़ा उग्र रूप ले रही है, अतः आप सपरिवार यहाँ से चले जाइये। यह हम अवश्य जानते हैं कि आप पौषध व्रत में हैं, पर सभी व्रतों में 'सव्व समाहिवत्तियागारेणं' यह आगार रहता है। अतः आप निकलने में विलम्ब मत करो।"

सेठ ने दृढ़ता से कहा – "आगार तो अल्पसत्त्वों के लिए है। मुझे तो दृढ़-भाव में रहना है। जो जलता है, वह मेरा नहीं जलता। मेरा जो है, वह न तो आग में जलता है और न पानी से गलता है। इस प्रकार धर्म की दृढ़ भावना में आत्मा को लगाये वे निर्भीकता से पौषधशाला में ही बैठे रहें।" सेठ की धर्म दृढ़ता से उनके मकान, दुकानादि समुद्र के मध्य टापू की भाँति सम्पूर्ण **सुरक्षित** रहे। पूर्वोपार्जित पुण्य के प्रभाव से सेठजी बहुत आनन्द से समय व्यतीत करते रहे। ग्यारह पुत्र भी सेठजी की बहुत विनय भक्ति किया करते थे। नम्रता ही उनके जीवन की साधना थी।

एक समय वृद्धावस्था के पदार्पण से सिर के केश श्वेत देखकर सुव्रत सेठ विचारने लगे – "अरे ! काल का संदेश आ गया है।"

अब सँभलने की आवश्यकता है। अब भी यूँ ही यदि समय व्यतीत हो गया, तो पश्चात्ताप ही पल्ले पड़ेगा। अतः अब ज्येष्ठ पुत्र परिवार को समस्त कार्य सौंपकर सर्वारम्भ का परित्याग कर मुझे संयमी बनना ही श्रेयस्कर है।" मानव की दृढ़ निष्ठामयी भावना, कभी विफल नहीं होती। संयोगवश उसी नगर में श्री **सुव्रताचार्य** का पदार्पण हुआ। सेठजी आचार्यश्री के शुभागमन का समाचार सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। **(१)** मानो अन्धे को नेत्र, **(२)** भूखे को भोजन, **(३)** प्यासे को जल या **(४)** भक्त को भगवान मिले हों।

धर्म भावना की प्रेरणा से आकृष्ट हो, अपनी इच्छा को सम्पूर्ण करने हेतु परिवार सहित वे आचार्यश्री को वन्दन करने गये। आचार्यश्री ने **धर्मदेशना** में प्ररूपित किया –

"आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परम दुल्लहा।" *(उत्तरा. ३/९)*

कदाचित कर्म लाघव और पुण्य के योग से शास्त्र श्रवण करने का सुयोग मिल जाये, परन्तु उसमें श्रद्धा होना बहुत कठिन है। **(१)** श्रद्धा अर्थात् तत्त्व का पूरा निश्चय, **(२)** देव, गुरु और धर्म की सच्ची पहचान, **(३)** सत्य मार्ग मोक्ष दशा में पूरी-पूरी रुचि, प्रेम। इसी श्रद्धा को बोधि कहते हैं। वह कर्म की लघुता के बिना प्राप्त नहीं होती। ज्ञानावरणीय आदि किसी भी कर्म की स्थिति एक क्रोड़ा-क्रोड़ी सागरोपम से अधिक न हो, किन्तु कुछ कम हो। तब राग-द्वेष की मजबूत ग्रंथि (गाँठ) टूटती है। ग्रंथि-भेद होना कर्म की लघुता का चिह्न है। ग्रंथि-भेद होने से बोधि-सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। जीव मोक्षार्थी बनता है।

बोधि का प्रभाव इतना अधिक है कि उसे जिसने पा लिया, उसका अधिक भव-भ्रमण रुक जाता है। बोधि प्राप्त होने के बाद यदि वह विद्यमान रहे, तो अधिक से अधिक पन्द्रहवें भव से मुक्ति प्राप्त हो जाती है, यदि वह उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है, तो भी देशोन अर्द्ध-पुद्गल परावर्तन में **मोक्ष** अवश्य ही होता है। चारित्र का मूल भी यही बोधि है। इसके बिना की जाने वाली समस्त क्रियाएँ तुच्छ फल देने वाली है, करोड़ों के समक्ष अधेले के समान हैं।

जैसे- अंकों में उत्तर स्थान से पूर्व स्थान का मूल्य, दस-दस गुना है, वैसे सम्यक्त्व से ज्ञान का मूल्य दस गुना और ज्ञान से चारित्र का मूल्य दस गुना है। इसी प्रकार चारित्र की सफलता है। (१) मनुष्य-भव, (२) आर्य क्षेत्र, (३) उत्तम कुल, (४) निरोगी शरीर, (५) परिपूर्ण इन्द्रियाँ, (६) लम्बी आयु, (७) संत समागम, (८) शास्त्र श्रवण, (९) श्रद्धा, (१०) चारित्र। इन सभी की दुर्लभता बताने का आशय है कि ये सभी बहुतमूल्यवान हैं। चारित्र सबसे मूल्यवान है। जो वस्तुएँ अधिक मूल्यवान होती हैं, वे ही दुर्लभ होती हैं। जो वस्तुएँ अधिक मूल्यवान होती हैं, उन्हें पाने के लिए मन ललचाता रहता है। वह मिल जाती हैं, तो मूल्यवान समझकर उसकी रक्षा बड़ी सावधानी से की जाती है। क्योंकि यदि उसके मिलने का अवसर निकल गया, तो फिर बार-बार ऐसा अवसर नहीं मिलता।

फिर तो अनन्त काल व्यतीत हो जाने पर भी भाग्य से ही ऐसा सुन्दर अवसर हाथ लग सकता है। अतएव प्राप्त न कर पाये हों, तो उसको प्राप्त करने के लिए, रक्षा के लिए सावधान रहना चाहिए। बार-बार प्रयत्न करना चाहिए।

आचार्यश्री के मुख से वैराग्यमय देशना श्रवण कर सुवृत सेठजी ने प्रतिबोध पाया। उन्होंने अपनी ग्यारह स्त्रियों सहित बड़ी उमंग से चारित्र स्वीकार किया। निरतिचारपूर्वक चारित्र का पालन करते हुए द्वादशांगी का अध्ययन किया। एक छह मासी तप, चार चौमासी तप, सौ तेले, दो सौ बेले आदि अनेक प्रकार की तपश्चर्याओं में आत्मा भावित करते हुए विचर रहे थे।

卐 देव परीक्षा सुव्रत मुनि को मोक्ष 卐

एक समय वे मौन एकादशी के दिन काउस्सग्ग ध्यान में स्थित था। उस समय किसी एक व्यंतर देवता ने परीक्षार्थ उनको तप से क्षोभ करने के लिये वहाँ आकर, एक साधु के शरीर में किसी भाँति भी शान्त न हो सके, ऐसी असह्य वेदना उदीरणा की। और उस देवता ने स्वयं भी साधु के शरीर में प्रवेश किया। उसके बल से वह साधु, काउस्सग्ग ध्यान में स्थित सुव्रतमुनि के पास आकर कहने लगा कि, हे सुव्रत ऋषि! आप उपाश्रय से बाहर जाकर कोई श्रावक के घर से औषध लाने का उपयोग करो, कि जिससे मेरी पीड़ा शान्त हो जावे। तुम निरोग हो और मैं वेदना से पीड़ित हो रहा हूँ, इससे मैं जाने से विवश हूँ।

यह सुन सुव्रत मुनि ने विचार किया कि जो आज मैंने मौन व्रत लिया है। इसलिये मैं कोई से बोल नहीं सकता हूं तथा उपाश्रय से बाहर न जाने का नियम भी लिया है, इससे बाहर भी नहीं जा सकता। किन्तु हॉ, "यदि साधु की भक्ति के लिये कदाचित् जाना पड़े और कुछ दोष नहीं लगता हो तो चलकर गुरु महाराज से पूछ लूं" इत्यादि विचार करने लगे इतने ही में साधु ने देवकृत बीमारी से क्रोधित हो ओघा ले सुव्रत साधु के सिर में जोर से मारा।

परन्तु क्षमावंत सुव्रत मुनि उससे कुद्ध न हुए, और उलटे क्षमा धारण कर विचार करने लगे, ओफ! यह साधु कैसा दुःख पा रहा है? अरे! मैं कैसा पापी हूँ जो उनकी भक्ति नहीं करता हूँ।

अरे! तीर्थंकर भगवान, गणधर महाराज, साधु वर्ग, इन्द्र, चन्द्र, राजा चक्रवर्ती, देवता, वासुदेव, प्रति वासुदेव तथा और भी मनुष्यों को इस पापी कर्म राजा ने नहीं छोड़ा है, फिर मैं किस बाग की मूली हूँ। यह साधु जो मारता है वो हे चेतन! तू बराबर सहन कर। पंच महाव्रत

धारी के हाथों की मार, कोई मार नहीं है, यह मार तो कर्मरज को दूर करने वाली है, कर्मरज दूर होगा तब ही सुख मिलने का है। अरे! तेरे को तो उनका उपकार ही मानना योग्य है क्योंकि वे कर्म दूर करने में सहायता करते हैं। इस भाँति चिंतन करते शुक्ल ध्यान धरते, क्षपक श्रेणी में चढ घातिकर्म क्षय करके केवलज्ञान को प्राप्त हुए। उस देव ने तुरंत ही साधु के शरीर में से निकल दोनों हाथ जोड़ केवली महाराज के सामने हो क्षमा मांगी। प्रभो! क्षमा कीजिये। सिर्फ परीक्षा के लिये ही मैंने इतने कष्ट दिये है। सच है, सुवर्ण-सुवर्ण ही है जितना तपावे उतना ही विशेष कांतिवान होता है। इतना कह तीन बार प्रदक्षिणा देकर केवल ज्ञान का उत्सव करने के लिये उस देवता ने बड़ा महोत्सव किया।

पृथ्वी पर भ्रमण कर, अनेक भव्य जीवों को धर्म का उपदेश देकर बहुत वर्षों तक केवल पर्याय को पालन कर अंत में अनशन करके **सुव्रत मोक्ष पद** को प्राप्त हुए।

इसी प्रकार अन्य भव्य जीव भी इस तप का आराधन करने से इस भव में ऋद्धि को भोग कर अंत में मोक्ष सुख पाते हैं। श्री नेमीश्वर भगवान के मुख से यह कथा सुनकर श्री कृष्ण वासुदेव भी धर्म दलाली में लीन हुए, जिससे तीर्थंकर गोत्र कर्म उपार्जन किया। यह कथन श्री महावीर स्वामी ने गौतम गणधरजी से कहा। उसे सुनकर अनेकों भव्य प्राणी मौन एकादशी व्रत की आराधना करने को उद्यत हुए।

मौन ग्यारस की तालिका वर्ष २००६ व २००७ (संवत् २०६३ व २०६४)

तारीख	वार	मिती	तारीख	वार	मिती	तारीख	वार	मिती
५-८-०६	शनि	श्रावण सु. ११	२९-१-०७	सोम	माघ सुदी ११	२६-७-०७	गुरु	आषाढ़ सु. ११
४-९-०६	सोम	भादवा सु. ११	२७-२-०७	मंगल	फाल्गुन सु. ११	२४-८-०७	शुक्र	श्रावण सु. ११
३-१०-०६	मंगल	आश्विन सु. ११	२९-३-०७	गुरु	चैत्र सुदी ११	२३-९-०७	रवि	भादवा सु. ११
२-११-०६	गुरु	कार्तिक सु.११	२७-४-०७	शुक्र	वैशाख सु. ११	२२-१०-०७	सोम	आश्विन सु. ११
१-१२-०६	**शुक्र***	**अगहन सु.११**	२७-५-०७	रवि	प्र.ज्येष्ठ सु. ११	२१-११-०७	बुध	कार्तिक सु. ११
३०-१२-०६	शनि	पौष सुदी ११	२६-६-०७	मंगल	द्वि.ज्येष्ठ सु. ११	**२०-१२-०७**	**गुरु***	**अगहन सु.११**

दोहा

मौन ग्यारस की तिथि, सब तिथियों में ज्येष्ठ।
कल्याणक पाँच साथ में, आराधना हो श्रेष्ठ।।

卐 मौन-सुदी ग्यारस स्तवन 卐

(स्वर- जय जगदीश हरे)

सुदी एकादशी प्यारी, सुदी एकादशी प्यारी,
मिगसर से आदिकर, सेवो नर नारी ।।टेर।।

सब तिथियों में अनुत्तर कल्याणक पंच, स्वामी
सब दुख संकट नाशे[२], सुख है सौ टंच ॥ **सुदी एकादशी...।।१।।**

श्री अरनाथ दीक्षित, नमि केवल ज्ञानी, स्वामी
मल्ली जन्म दीक्षा[२], अपि केवल ज्ञानी ॥ **सुदी एकादशी...।।२।।**

भरत ऐरावत दस ही, तथा काल तीनों, स्वामी
कहे कृष्ण से नेमि[२], शत सार्द्ध जानो ॥ **सुदी एकादशी...।।३।।**

धन्य श्रेष्ठी सुव्रत, सपरिजन सेवी, स्वामी
दिव शिव सब सुख पाये[२], कीर्ते वाग्देवी ॥ **सुदी एकादशी...।।४।।**

卐 मौन ग्यारस की तालिका (वर्ष २००८ से २०२५) 卐

प्रत्येक वर्ष अगहन सुदी ग्यारस से तप प्रारम्भ करें (संवत् २०६४ से २०८२)

(श्री वेङ्कटेश्वर शताब्दी पञ्चांग पर आधारित) ***(अपनी मान्यता के पञ्चांग से मिलान करें।)***

सन् २००८ (विक्रम संवत् २०६४-६५)			सन् २००९ (विक्रम संवत् २०६५-६६)		
तारीख	वार	मिती	तारीख	वार	मिती
१८-१-२००८	शुक्रवार	पौष सुदी ११	७-१-२००९	बुधवार	पौष सुदी ११
१७-२-२००८	रविवार	माघ सुदी ११	६-२-२००९	शुक्रवार	माघ सुदी ११
१७-३-२००८	सोमवार	फाल्गुन सु. ११	७-३-२००९	शनिवार	फाल्गुन सु. ११
१६-४-२००८	बुधवार	चैत्र सुदी ११	५-४-२००९	रविवार	चैत्र सुदी ११
१५-५-२००८	गुरुवार	वैशाख सु. ११	५-५-२००९	मंगलवार	वैशाख सु. ११
१४-६-२००८	शनिवार	ज्येष्ठ सु. ११	३-६-२००९	बुधवार	ज्येष्ठ सु. ११
१३-७-२००८	रविवार	आषाढ़ सु. ११	२-७-२००९	गुरुवार	आषाढ़ सु. ११
१२-८-२००८	मंगलवार	श्रावण सु. ११	१-८-२००९	शनिवार	श्रावण सु. ११
११-९-२००८	गुरुवार	भादवा सु. ११	३१-८-२००९	सोमवार	भादवा सु. ११
११-१०-२००८	शनिवार	आश्विन सु. ११	२९-९-२००९	मंगलवार	आश्विन सु. ११
९-११-२००८	रविवार	कार्तिक सु.११	२९-१०-२००९	गुरुवार	कार्तिक सु. ११
९-१२-२००८	**मंगलवार***	**अगहन सु. ११**	**२८-११-२००९**	**शनिवार***	**अगहन सु. ११**
			२८-१२-२००९	सोमवार	पौष सु. ११

सन् २०१० (विक्रम संवत् २०६६-६७)

तारीख	वार	मिती
२६-१-२०१०	मंगलवार	माघ सु. ११
२५-२-२०१०	गुरुवार	फाल्गुन सु. ११
२६-३-२०१०	शुक्रवार	चैत्र सुदी ११
२४-४-२०१०	शनिवार	प्र.वैशाख सु. ११
२४-५-२०१०	सोमवार	द्वि.वैशाख सु. ११
२२-६-२०१०	मंगलवार	ज्येष्ठ सु. ११
२१-७-२०१०	बुधवार	आषाढ़ सु. ११
२०-८-२०१०	शुक्रवार	श्रावण सु. ११
१९-९-२०१०	रविवार	भादवा सु. ११
१८-१०-२०१०	सोमवार	आश्विन सु. ११
१७-११-२०१०	बुधवार	कार्तिक सु. ११
१७-१२-२०१०	**शुक्रवार***	**अगहन सु. ११**

सन् २०११ (विक्रम संवत् २०६७-६८)

तारीख	वार	मिती
१६-१-२०११	रविवार	पौष सुदी ११
१४-२-२०११	सोमवार	माघ सुदी ११
१६-३-२०११	बुधवार	फाल्गुन सु. ११
१४-४-२०११	गुरुवार	चैत्र सुदी ११
१३-५-२०११	शुक्रवार	वैशाख सु. ११
१२-६-२०११	रविवार	ज्येष्ठ सु. ११
११-७-२०११	सोमवार	आषाढ़ सु. ११
९-८-२०११	मंगलवार	श्रावण सु. ११
८-९-२०११	गुरुवार	भादवा सु. ११
७-१०-२०११	शुक्रवार	आश्विन सु. ११
६-११-२०११	रविवार	कार्तिक सु. ११
६-१२-२०११	**मंगलवार***	**अगहन सु. ११**

सन् २०१२ (विक्रम संवत् २०६८-६९)

तारीख	वार	मिती
५-१-२०१२	गुरुवार	पौष सु. ११
३-२-२०१२	शुक्रवार	माघ सुदी ११
४-३-२०१२	रविवार	फाल्गुन सु. ११
३-४-२०१२	मंगलवार	चैत्र सुदी ११
२-५-२०१२	बुधवार	वैशाख सु. ११
१-६-२०१२	शुक्रवार	ज्येष्ठ सु. ११
३०-६-२०१२	शनिवार	आषाढ़ सु. ११
२९-७-२०१२	रविवार	श्रावण सु. ११
२७-८-२०१२	सोमवार	प्र.भादवा सु. ११
२६-९-२०१२	बुधवार	द्वि. भादवा सु. ११
२५-१०-२०१२	गुरुवार	आश्विन सु. ११
२४-११-२०१२	शनिवार	कार्तिक सु. ११
२३-१२-२०१२	**रविवार***	**अगहन सुदी ११**

सन् २०१३ (विक्रम संवत् २०६९-७०)

तारीख	वार	मिती
२२-१-२०१३	मंगलवार	पौष सुदी ११
२१-२-२०१३	गुरुवार	माघ सुदी ११
२३-३-२०१३	शनिवार	फाल्गुन सु. ११
२२-४-२०१३	सोमवार	चैत्र सुदी ११
२१-५-२०१३	मंगलवार	वैशाख सु. ११
२०-६-२०१३	गुरुवार	ज्येष्ठ सु. ११
१९-७-२०१३	शुक्रवार	आषाढ़ सु. ११
१७-८-२०१३	शनिवार	श्रावण सु. ११
१५-९-२०१३	रविवार	भादवा सु. ११
१५-१०-२०१३	मंगलवार	आश्विन सु. ११
१३-११-२०१३	बुधवार	कार्तिक सु. ११
१३-१२-२०१३	**शुक्रवार***	**अगहन सु.११**

सन् २०१४ (विक्रम संवत् २०७०-७१)

तारीख	वार	मिती
११-१-२०१४	शनिवार	पौष सुदी ११
१०-२-२०१४	सोमवार	माघ सुदी ११
१२-३-२०१४	बुधवार	फाल्गुन सु. ११
११-४-२०१४	शुक्रवार	चैत्र सुदी ११
१०-५-२०१४	शनिवार	वैशाख सु. ११
९-६-२०१४	सोमवार	ज्येष्ठ सु. ११
८-७-२०१४	मंगलवार	आषाढ़ सु. ११
७-८-२०१४	गुरुवार	श्रावण सु. ११
५-९-२०१४	शुक्रवार	भादवा सु. ११
४-१०-२०१४	शनिवार	आश्विन सु. ११
३-११-२०१४	सोमवार	कार्तिक सु. ११
२-१२-२०१४	**मंगलवार***	**अगहन सु. ११**

सन् २०१५ (विक्रम संवत् २०७१-७२)

तारीख	वार	मिती
१-१-२०१५	गुरुवार	पौष सुदी ११
३०-१-२०१५	शुक्रवार	माघ सुदी ११
१-३-२०१५	रविवार	फाल्गुन सु. ११
३१-३-२०१५	मंगलवार	चैत्र सुदी ११
२९-४-२०१५	बुधवार	वैशाख सु. ११
२९-५-२०१५	शुक्रवार	ज्येष्ठ सु. ११
२८-६-२०१५	रविवार	प्र.आषाढ़ सु. ११
२७-७-२०१५	सोमवार	द्वि.आषाढ़ सु. ११
२६-८-२०१५	बुधवार	श्रावण सु. ११
२४-९-२०१५	गुरुवार	भादवा सु. ११
२४-१०-२०१५	शनिवार	आश्विन सु. ११
२२-११-२०१५	रविवार	कार्तिक सु. ११
२०-१२-२०१५	**सोमवार***	**अगहन सु.११**

सन् २०१६ (विक्रम संवत् २०७२-७३)

तारीख	वार	मिती
२०-१-२०१६	बुधवार	पौष सुदी ११
१८-२-२०१६	गुरुवार	माघ सुदी ११
१९-३-२०१६	शनिवार	फाल्गुन सु. ११
१७-४-२०१६	रविवार	चैत्र सुदी ११
१७-५-२०१६	मंगलवार	वैशाख सु. ११
१६-६-२०१६	गुरुवार	ज्येष्ठ सदी ११
१५-७-२०१६	शुक्रवार	आषाढ़ सु. ११
१४-८-२०१६	रविवार	श्रावण सु. ११
१३-९-२०१६	मंगलवार	भादवा सु. ११
१२-१०-२०१६	बुधवार	आश्विन सु. ११
११-११-२०१६	शुक्रवार	कार्तिक सु. ११
१०-१२-२०१६	**शनिवार***	**अगहन सु. ११**

सन् २०१७ (विक्रम संवत् २०७३-७४)

तारीख	वार	मिती
८-१-२०१७	रविवार	पौष सुदी ११
७-२-२०१७	मंगलवार	माघ सुदी ११
८-३-२०१७	बुधवार	फाल्गुन सु. ११
७-४-२०१७	शुक्रवार	चैत्र सुदी ११
६-५-२०१७	शनिवार	वैशाख सुदी ११
५-६-२०१७	सोमवार	ज्येष्ठ सुदी ११
४-७-२०१७	मंगलवार	आषाढ़ सुदी ११
३-८-२०१७	गुरुवार	श्रावण सुदी ११
२-९-२०१७	शनिवार	भादवा सुदी ११
१-१०-२०१७	रविवार	आश्विन सु. ११
३१-१०-२०१७	मंगलवार	कार्तिक सुदी ११
३०-११-२०१७	**गुरुवार***	**अगहन सुदी ११**
२९-१२-२०१७	शुक्रवार	पौष सुदी ११

सन् २०१८ (विक्रम संवत् २०७४-७५)

तारीख	वार	मिती
२८-१-२०१८	रविवार	माघ सुदी ११
२६-२-२०१८	सोमवार	फाल्गुन सु. ११
२८-३-२०१८	बुधवार	चैत्र सुदी ११
२६-४-२०१८	गुरुवार	वैशाख सु. ११
२५-५-२०१८	शुक्रवार	प्र.ज्येष्ठ सु. ११
२३-६-२०१८	शनिवार	द्वि.ज्येष्ठ सु. ११
२३-७-२०१८	सोमवार	आषाढ़ सु ११
२१-८-२०१८	मंगलवार	श्रावण सु. ११
२०-९-२०१८	गुरुवार	भादवा सुदी ११
२०-१०-२०१८	शनिवार	आश्विन सु. ११
१९-११-२०१८	सोमवार	कार्तिक सु. ११
११-१२-२०१८	**बुधवार***	**अगहन सुदी ११**

सन् २०१९ (विक्रम संवत् २०७५-७६)

तारीख	वार	मिती
१७-१-२०१९	गुरुवार	पौष सुदी ११
१६-२-२०१९	शनिवार	माघ सुदी ११
१७-३-२०१९	रविवार	फाल्गुन सु. ११
१५-४-२०१९	सोमवार	चैत्र सु. ११
१५-५-२०१९	बुधवार	वैशाख सु. ११
१३-६-२०१९	गुरुवार	ज्येष्ठ सु. ११
१२-७-२०१९	शुक्रवार	आषाढ़ सु. ११
११-८-२०१९	रविवार	श्रावण सु. ११
९-९-२०१९	सोमवार	भादवा सु. ११
९-१०-२०१९	बुधवार	आश्विन सु. ११
८-११-२०१९	शुक्रवार	कार्तिक सु. ११
८-१२-२०१९	**रविवार***	**अगहन सु. ११**

सन् २०२० (विक्रम संवत् २०७६-७७)

तारीख	वार	मिती
६-१-२०२०	सोमवार	पौष सुदी ११
५-२-२०२०	बुधवार	माघ सुदी ११
६-३-२०२०	शुक्रवार	फाल्गुन सु. ११
४-४-२०२०	शनिवार	चैत्र सुदी ११
४-५-२०२०	सोमवार	वैशाख सु. ११
२-६-२०२०	मंगलवार	ज्येष्ठ सु. ११
१-७-२०२०	बुधवार	आषाढ़ सु. ११
३०-७-२०२०	गुरुवार	श्रावण सु. ११
२९-८-२०२०	शनिवार	भादवा सु. ११
२७-९-२०२०	रविवार	प्र.आश्विन सु. ११
२७-१०-२०२०	मंगलवार	द्वि.आश्विन सु. ११
२५-११-२०२०	बुधवार	कार्तिक सु. ११
२५-१२-२०२०	**शुक्रवार***	**अगहन सुदी ११**

सन् २०२१ (विक्रम संवत् २०७७-७८)

तारीख	वार	मिती
२४-१-२०२१	रविवार	पौष सुदी ११
२३-२-२०२१	मंगलवार	माघ सुदी ११
२५-३-२०२१	गुरुवार	फाल्गुन सु. ११
२३-४-२०२१	शुक्रवार	चैत्र सु. ११
२३-५-२०२१	रविवार	वैशाख सु. ११
२१-६-२०२१	सोमवार	ज्येष्ठ सु. ११
२०-७-२०२१	मंगलवार	आषाढ़ सु. ११
१८-८-२०२१	बुधवार	श्रावण सु. ११
१७-९-२०२१	शुक्रवार	भादवा सु. ११
१६-१०-२०२१	शनिवार	आश्विन सु. ११
१५-११-२०२१	सोमवार	कार्तिक सु. ११
१४-१२-२०२१	**मंगलवार***	**अगहन सु.११**

सन् २०२२ (विक्रम संवत् २०७८-७९)

तारीख	वार	मिती
१३-१-२०२२	गुरुवार	पौष सुदी ११
१२-२-२०२२	शनिवार	माघ सुदी ११
१४-३-२०२२	सोमवार	फाल्गुन सु. ११
१२-४-२०२२	मंगलवार	चैत्र सुदी ११
१२-५-२०२२	गुरुवार	वैशाख सु. ११
१०-६-२०२२	शुक्रवार	ज्येष्ठ सु. ११
१०-७-२०२२	रविवार	आषाढ़ सु. ११
८-८-२०२२	सोमवार	श्रावण सु. ११
६-९-२०२२	मंगलवार	भादवा सु. ११
६-१०-२०२२	गुरुवार	आश्विन सु. ११
४-११-२०२२	शुक्रवार	कार्तिक सु. ११
३-१२-२०२२	**शनिवार***	**अगहन सुदी ११**

सन् २०२३ (विक्रम संवत् २०७९-८०)

तारीख	वार	मिती
२-१-२०२३	सोमवार	पौष सुदी ११
१-२-२०२३	बुधवार	माघ सुदी ११
३-३-२०२३	शुक्रवार	फाल्गुन सुदी ११
१-४-२०२३	शनिवार	चैत्र सुदी ११
१-५-२०२३	सोमवार	वैशाख सुदी ११
३१-५-२०२३	बुधवार	ज्येष्ठ सुदी ११
२९-६-२०२३	गुरुवार	आषाढ़ सु. ११
२९-७-२०२३	शनिवार	प्र.श्रावण सु. ११
२७-८-२०२३	रविवार	द्वि.श्रावण सु. ११
२५-९-२०२३	सोमवार	भादवा सु. ११
२५-१०-२०२३	बुधवार	आश्विन सु. ११
२३-११-२०२३	गुरुवार	कार्तिक सुदी ११
२३-१२-२०२३	**शनिवार***	**अगहन सु.११**

सन् २०२४ (विक्रम संवत् २०८०-८१)

तारीख	वार	मिती
२१-१-२०२४	रविवार	पौष सुदी ११
२०-२-२०२४	मंगलवार	माघ सुदी ११
२०-३-२०२४	बुधवार	फाल्गुन सु. ११
१९-४-२०२४	शुक्रवार	चैत्र सुदी ११
१९-५-२०२४	रविवार	वैशाख सु. ११
१७-६-२०२४	सोमवार	ज्येष्ठ सु. ११
१७-७-२०२४	बुधवार	आषाढ़ सु. ११
१६-८-२०२४	शुक्रवार	श्रावण सु. ११
१४-९-२०२४	शनिवार	भादवा सु. ११
१४-१०-२०२४	सोमवार	आश्विन सु. ११
१२-११-२०२४	मंगलवार	कार्तिक सु. ११
११-१२-२०२४	**बुधवार**	**अगहन सुदी ११**

सन् २०२५ (विक्रम संवत् २०८१-८२)

तारीख	वार	मिती
१०-१-२०२५	शुक्रवार	पौष सुदी ११
८-२-२०२५	शनिवार	माघ सुदी ११
१०-३-२०२५	सोमवार	फाल्गुन सुदी ११
८-४-२०२५	मंगलवार	चैत्र सुदी ११
८-५-२०२५	गुरुवार	वैशाख सुदी ११
६-६-२०२५	शुक्रवार	ज्येष्ठ सुदी ११
६-७-२०२५	रविवार	आषाढ़ सु. ११
५-८-२०२५	मंगलवार	श्रावण सु. ११
३-९-२०२५	बुधवार	भादवा सु. ११
३-१०-२०२५	शुक्रवार	आश्विन सु. ११
२-११-२०२५	रविवार	कार्तिक सु. ११
१-१२-२०२५	**सोमवार**	**अगहन सुदी ११**
३०-१२-२०२५	मंगलवार	पौष सु.११

श्रावक के नित्य प्रत्याख्यान

चौदह राजु लोक में, असंख्य द्वीप समुद्र में, अढ़ाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र में, मेरे शरीर से स्पर्श करने में आवे, मुँह से खाने में, पीने में, बोलने में आवे, रसनेन्द्रिय से रस लेने में आवे, नाक से सूँघने में आवे, आँखों से देखने में आवे, कानों से सुनने में आवे, दोनों हाथों से लेने-देने में आवे, काम करने में आवे, दोनों पाँवों से चलने में आवें, शुभ विचार मन में आवे, इंद्रियों से, मन से, वचन से, काया से जितनी क्रिया करने में आवे, भगवान की साक्षी से मेरे धारण अनुसार मुझे आगार। इनसे अधिक जग में जितने पाप हैं, उन सब पाँच पापों के आस्रव सेवन के- **प्रत्याख्यान**।

जाव नियमं दुविहं तिविहेणं, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

समस्त जीवों के साथ क्षमापना

विश्व में सकल नारकीय, तिर्यंच, मनुष्य और देवताओं में से, मैंने मेरे पूर्व भवों में तथा वर्तमान भव में आज तक किसी भी जीव को हणा हो, परितापना उपजाई हो अर्थात् किसी भी प्रकार का दुःख जानते, अजानते दिया हो और किसी भी जीव के साथ, मन-योग, वचन-योग, काया-योग से वैर-विरोध हुआ हो, उन सबके साथ मैं खमत खामणा करता हूँ। मेरा किसी भी जीव के साथ वैर-विरोध नहीं है परन्तु विश्व के सर्व जीवों के साथ मैत्री भाव हैं।

इसी भरत क्षेत्र में हुए श्री ऋषभदेव आदि वर्तमान अवसर्पिणी काल के सभी तीर्थंकर भगवन्तों को मैं त्रिकरण त्रियोग से वंदन करता हूँ। इस उपरान्त बाह्य एवं आभ्यंतर तप करने के लिए अनुकूलता होते हुए भी उभय प्रकार के तप की आराधना करने से मैं वंचित रहा। उपरांत तप की आचरणा प्रसंग में जिस विधि से आचरण करना चाहिए, उसी विधि से आचरण किया नहीं, इत्यादि कारण से मुझे तपाचार में जो कोई अतिचारादि लगा हो, उसका मैं **मिच्छा मि दुक्कडं** देता हूँ।

इसी तरह धर्मानुष्ठान के विषय में जिस तरह मेरा वीर्योल्लास होना चाहिए, उस वीर्योल्लास में कुछ कमी रही हो, उसका भी मैं त्रिकरण त्रियोग से बारम्बार **मिच्छा मि दुक्कडं** देता हूँ।

सागारी संथारे के पच्चक्खाण

(रात्रि को सोने से पहले हमेशा बोलें)

"आहार, शरीर, उपधि, पचक्खुँ पाप अठार।
मरण पाऊँ तो वोसिरावुं, जागूँ, उठूँ तो आगार"।।

सूचना :- रात्रि को आवश्यक कुछ भी शारीरिक काम करना हो या सुबह जाग्रत हों, तब ५ बार **'नवकार मन्त्र'** गिनकर पार लें।

अन्त समय की आराधना

१. हे जिनेन्द्र ! ये सकल संसार के भोग दुःखमय असार है और सभी सम्बन्धी जन स्वार्थी हैं। इस आत्मा ने प्रत्येक भव में संसार के दुःखमय भोग और स्वार्थमय सम्बन्धों का अनुभव किया है। ऐसे संसार भोग तथा सम्बन्धों से शीघ्र मुक्त हो जाऊँ, ऐसी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

२. हे जिनेन्द्र ! इस भव में मैं चारित्र नहीं ले सका, किन्तु अगले भव में प्रथम वय में मैं ज्ञान वैराग्य के साथ चारित्र आदरुं, ऐसी आपसे मैं प्रार्थना करता हूँ।

३. हे जिनेन्द्र ! इस संसार में जब तक मैं भव करूँ, तब तक मुझे राज, ऋद्धि आदि संसार सुख की कुछ भी इच्छा नहीं, है, किन्तु आने वाले भव में मुझे उत्तम मनुष्य भव, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म और धर्म-निष्ठ चारित्र मार्ग बताने वाले माता-पिता, गुरु मिलें। सुसंस्कार मिलें, जिससे मैं, मेरा आत्म कल्याण साध सकूँ, ऐसी मेरी आपसे प्रार्थना है।

४. हे जिनेन्द्र ! मार्गानुसारिता, समकित का लाभ, भव का निर्वेद, मोक्षार्थीपना श्रुत संयम तप, समाधि मरण, संथारा कर्म का क्षय तथा दुःख का क्षय की मुझे प्राप्ति हो, ऐसी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

५. हे जिनेन्द्र ! सर्व जीवों के साथ मेरा मैत्री भाव है। किसी के साथ वैर-भाव नहीं है। पूर्व भव वैर से दूसरे जीव मेरे साथ वैर-भाव रखें, तो भी मैं उनके प्रति वैर नहीं रखूँगा। विरोध नहीं करूँगा।

६. हे जिनेन्द्र ! आपके शासन में निदान (नियाणा) संसार सुख की इच्छा करने का निषेध है। अतः कभी नियाणा न करूँ। किया हो तो वोसिराता हूँ।

७. हे जिनेन्द्र ! मुझे मांस, मदिरा, अंडे, बासी मक्खन, मधु, जमीकंद, तंबाखू, गुटका आदि इन समस्त व्यसनों का पूर्वकाल से पूर्ण त्याग है।

८. हे जिनेन्द्र ! भव अन्तकाल के समय आहार, शरीर, उपाधि व अठारह पाप स्थान ममत्व का मैं परित्याग करता हूँ। वोसिराता हूँ। पूर्व तक मेरे आगार हैं।

९. हे जिनेन्द्र ! अन्तकाल के समय मेरा ध्यान न रहे और मैं सब त्याग न कर सकूँ, तो तब सर्वथा सभी त्यागों की धारणा अभी से करता हूँ।

१०. हे जिनेन्द्र ! मेरी मृत्यु पर कोई रोये, कोई पानी गिरा दे और मेरा पुदगल (अनित्य शरीर) दो घड़ी (४८ मिनट) से अधिक पड़ा रहे और उसमें जीव उत्पत्ति होने के बाद अग्नि दाह करे, उसका पाप मुझे न हो। वह मुझे त्याग है। मैं वोसिराता हूँ।

११. हे जिनेन्द्र ! मेरे घर में पूर्वजों के बसाये हुए और मेरे हाथ से बसे हुए जो भी शस्त्र अस्त्र हैं, उन सबका मेरी मृत्यु समय त्याग है। वोसिराता हूँ।

१२. हे जिनेन्द्र ! मेरे कुटुम्बी जन और अन्य जन, मेरे पीछे शस्त्र अस्त्रों का उपयोग करें, उसका पाप मेरे ऊपर नहीं है। वह मुझे त्याग है। वोसिराता हूँ।

१३. हे जिनेन्द्र ! घर की प्रत्येक वस्तु मेरी मृत्यु तक काम में ले सकता हूँ। मेरी मृत्यु समय उनका मुझे त्याग है। वोसिराता हूँ।

१४. हे जिनेन्द्र ! मेरा पाँच इन्द्रियों के विषयों में चार कषायों में तीन योगों में जो कुछ पाप लगा हो, तो वह सब मुझे त्याग है। वोसिराता हूँ। **मिच्छा मि दुक्कडं।**

संथारा समाधिमरण ग्रहण करने की विधि

● साधु श्रावक जीवन की उत्तम एवं अंतिम परिणति है- समाधि मरण। जीवन-पर्यन्त आभ्यंतर भाव शत्रुओं के साथ किये गये संग्राम में अन्तिम विजय प्राप्त करने का महान अभियान है- 'समाधिमरण'। संथारा दो प्रकार का होता है- (१) जावज्जीव का आगार रहित। (२) आयुष्य आदि आगार सहित।

● **विधि :-** संथारा ग्रहण करने के लिए बैठने योग्य/शयन करने योग्य भूमि तथा आसनादि का सूक्ष्म रूप से प्रतिलेखन आदि करें, योग्य आसन/बिछौना बिछावें, फिर पूर्व या उत्तर दिशा अथवा ईशान कोण के सम्मुख मुँह करके, तिखुत्तों के पाठ से तीन बार विधि सहित अनुज्ञा लेवें। फिर नवकार मंत्र, इरियावहियं का पाठ, तस्सउत्तरी बोलें। फिर इरियावहियं व लोगस्स का ध्यान करें ध्यान पश्चात् प्रकट में नवकार मंत्र व काउस्सग्ग शुद्धि का पाठ व लोगस्स बोलें।

● फिर प्रथम देव, गुरु, संघ पश्चात् चौरासी लाख जीवायोनि से खमत खमावणा करके बड़ी संलेखणा के पाठ से संथारा ग्रहण करें। संलेखणा के अन्त में ऐसी मेरी सद्दहणा प्ररुपणा पूर्व से चालू है, आज अवसर आया है, तो फरसना करके शुद्ध होऊँ, ऐसा बोलें।

● फिर बारह व्रत व अन्य पच्चक्खाण ग्रहण करके पूर्वकृत पापों, दोषों की आलोचना करके मिच्छा मि दुक्कडं दें। अठारह पाप स्थान को तीन करण तीन योग से त्याग करें, चारों या तीनों आहारों का करणयोग के बिना पचखाण करें, दो नमोत्थुणं दें।

● इसके पश्चात् **संथारे** में दृढ़ता के साथ स्थिरता बनी रहे, इस हेतु आर्तध्यान व रौद्र ध्यान छोड़कर पूरे घर में धार्मिक वातावरण बनाये रखें। संथारा पूर्ण होने तक नवकार मंत्र, लोगस्स, नमोत्थु णं, चत्तारिमंगलं नमो चउवीसाए, बारह भावना का स्वरूप, तीन मनोरथ, चार शरण एवं संथारे को दृढ़ बनाने वाले स्तवन आदि सुनाते रहें।

● यदि सागारी संथारा (नियत काल तक का) करना हो, तो उसमें विभिन्न आगार, जैसेः- अचित्त पानी, पहने हुए वस्त्र, धन-धान्य (भोजन) देने का, सेवा लेने आदि आगार रख सकते हैं तथा अवसर आने पर आगार वर्ज सकते हैं।

निश्रा : अपने धर्माचार्य हों तो उनके पास, वे न हो तो ज्ञानी अनुभवी स्थविर संतो के पास, अनुक्रम से सती, श्रावक, श्राविका, सम्यक्त्वी के पास संथारा ग्रहण करना चाहिए। उनकी निश्रा, कृपा, अतिशय से **संथारे** की सफलता व शुद्धि की संभावना बढ़ती है। आनंदादि श्रावकों ने महावीर स्वामी निश्रा के लिए उनके जीवित रहते संथारा किया।

इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि से संथारा करना चारित्र तप की कठिन परीक्षा एवं मृत्यु पर सच्ची विजय है।

卐 १. नवकारसी (नमुक्कार सहियं) का पच्चक्खाण 卐

उग्गए सूरे। 'णमुक्कारसहियं' पच्चक्खामि। चउव्विहं पि आहारं; असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं। वोसिरामि।

२. पोरिसी का पच्चक्खाण- उग्गए सूरे। 'पोरिसिं' पच्चक्खामि। चउव्विहं पि आहारं; असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं। पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहु-वयणेणं। सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं। वोसिरामि।

*नोट- पोरिसी की जगह डेढ़ पोरिसी **साड्ढपोरिसिं** बोलें। दो पोरिसी में **महत्तरा गारेणं** बोलें।*

卐 ३. एकासण का पच्चक्खाण 卐

'एगासणं' पच्चक्खामि, तिविहं पि आहारं; असणं, खाइमं, साइमं। अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं। सागरियागारेणं, आउट्टणपसारेणं, गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, (पारिट्ठावणियागारेणं)। महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि।

४. आयम्बिल का पच्चक्खाण- 'आयंबिलं' पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं। लेवालेवेणं, उक्खित्तविवेगेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं। पारिट्ठावणियागारेणं । महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरामि।

卐 ५. उपवास तिविहार का पच्चक्खाण 卐

उग्गए सूरे। 'अब्भत्तट्ठं' पच्चक्खामि। तिविहं पि आहारं; असणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं। महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं। वोसिरामि।

६. उपवास चौवहार का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे। 'अब्भत्तट्ठं' पच्चक्खामि। चउव्विहं पि आहारं; असणं, पाणं, खाइमं, साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं। महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं। वोसिरामि।

७. निवी (निविगइय) का पच्चक्खाण- 'निविगइयं' पच्चक्खामि, अण्णत्थणाभोगेणं सहस्सागारेण लेवालेवेणं गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएण महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि।

卐 ८. संवर का पच्चक्खाण 卐

द्रव्य से- पाँच आस्रव सेवन का पच्चक्खाण, क्षेत्र से- जितने क्षेत्र की मर्यादा रखी हो, उसके आगे जाने का त्याग, काल से- सूर्योदय (या पाँच नवकार न पढ़ूँ) तक, भाव से उपयोग सहित एक करण एक योग से न करेमि कायसा। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

९. दयाव्रत के पच्चक्खाण- उग्गए सूरे दयाव्रत अर्थात् छह काय जीवों की हिंसा करने का एक करण एक योग से पच्चक्खाण। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

卐 पच्चक्खाण पारने का पाठ 卐

पच्चक्ख्या पच्चक्खाण सम्मं काएणं, न फासियं, न पालियं, न सोहियं, न तिरियं, न किट्टियं, न आराहियं आणाए अणुपालियं न भवइ, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

बड़ी मांगलिक

अष्ट सिद्धि, नव निधि भण्डार। गौतम समर्‌यां, सुख सम्पत्ति के दातार।
परभाते उठ लीजे नाम। जो मन वांछित सीजे काज।
मंत्र माहे मोटो मंत्र। ते सुण्या होवे कान पवित्र।
चउदह पूरब केरो सार। प्रातः उठी समरो नवकार।
अणी मंत्रे, नहीं आवे आपदा। अणी मंत्रे, दुःख नहीं आवे कदा।
वेरी विखम पांय पड़े। जे नर उज्जड़-अटवी में खड़े।
भोजन वेला पेली एक, दुर्गति पड़ता राखो टेक।
अरिहंत, सिद्ध. आचार्य, उपाध्याय। सर्व साधु तणा लागूँ पाँय।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तपसार। ये नवपद लीजे भव नो पार।
श्रीपाल मैना अधिकार। सुन जो ग्रंथ के अनुसार।
चौवीसी तीर्थंकर सुमरे, भव-भव ना ई पातक हरे।
महावीरजी को शासन लई ने, धर्म में उद्यम करजो सही।
धर्म से धन होवे भण्डार, धर्म से दूरो नासे काल।
कान कहे वचन रसाल, सुनजो जीव दया प्रतिपाल।
मन्त्र बड़ो नवकार, सदा साकड़ो उबारे; मन्त्र बड़ो नवकार, ताव तेजरो निवारे।
मन्त्र बड़ो नवकार, रहे भाग भण्डार भरपूर; मन्त्र बड़ो नवकार, कायर नर होवे शूरा।
मन्त्र बड़ो नवकार, रोग आपदा टाले; मन्त्र बड़ो नवकार, मुगत के सुख में मेले।
पिंगल पढ़े न फारसी, (मागधी) पढ़े न गीता छन्द।
एक नवकार मन्त्र का गिन्‌या पीछे, नित का करो आनन्द।

चत्तारि मंगलं का पाठ

गुरु भगवन्त की आज्ञा (अनुज्ञा) से-

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।।
चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।।
अरिहंतों का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा,
केवली प्ररूपित दया धर्म का शरणा।
चार शरणा, दुःख हरणा, सुख करणा, मंगल करणा और शरण नहीं कोय
जो भव्य प्राणी आदरे, अक्षय अमर पद होय।।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार। श्री गुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फल दातार।।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान। भावे धर्म आराधिये, पावे केवल ज्ञान, पावे पद निर्वाण।।
नोट- अन्त में महापुरुषों की जय बोलें एवं तिक्खुतों के पाठ से तीन बार वंदना करें।